RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · AUGUST 2020 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

जानिए क्यों मनाया जाता है 'ओणम' का पर्व?

आस्था, प्रेम और विश्वास के पर्व 'ओणम' की शुरुआत 22 अगस्त से हो चुकी है, मुख्य रूप से केरल में मनाए जाने वाला ये पर्व दस दिनों का होता है, इस बार ये पर्व 2 सितंबर को खत्म होगा। कोरोना संकट के बीच इस त्योहार की चमक इस बार राज्य में फीकी है लेकिन भक्तगण अपने–अपने घरों में ही अपने अंदाज में नए साल का स्वागत कर रहे हैं, दरअसल केरलवासी ओणम को अपना 'न्यूईयर' मानते हैं, उनके लिए ये धार्मिक त्योहार से ज्यादा एक सांस्कृतिक पर्व है जो कि फसल के लिए मनाया जाता है, इस बार सभी अपने ईष्ट देव से प्रार्थना कर रहे हैं कि जल्दी से पूरी दुनिया को कोरोना संकट से मुक्ति मिले। चलिए जानते हैं 10 दिन तक चलने वाले इस खूबसूरत पर्व के बारे में कुछ खास बातें 'ओणम' पर सभी लोग अपने घरों को फूलों से सजाते हैं

'ओणम' पर सभी लोग अपने घरों को फूलों से सजाते हैं, इस दिन ही केरल में मशहूर नौका–दौड़ शुरू होती है। लोग इस दिन पारंपरिक वेशभूषा में तैयार होकर पूजा करते हैं। ऐसा माना जाता है कि केरल के त्रिकाकरा मंदिर में ही 'ओणम' की शुरुआत हुई थी।

क्यों मनाया जाता है ये त्योहार? मान्यता है कि केरल के एक राजा थे जिनका नाम था महाबलि, वो अपनी प्रजा से बहुत प्यार करते थे और बहुत बड़े दानी थे। वो कोशिश करते थे कि उनके राज्य में हर कोई खुश रहे इसलिए प्रजा उन्हें भगवान की तरह पूजा करती थी। महाबलि की ये लोकप्रियता देवताओं से देखी नहीं गई। राजा इंद्र ने भगवान विष्णु से कहा कि वो महाबलि की परीक्षा लें, विष्णु मान गये और उन्होंने ब्राह्मण वेश धारण करके महाबलि के पास पहुंचकर तीन पग जमीन की मांग की। महाबलि ने तुरंत हां कर दिया और उसके बाद विष्णु ने विराट रूप धारण करके तीन पग नापें, पहले पग में भू–लोक तथा दूसरे पग में स्वर्ग–लोक नाप लिया। तीसरे पग के लिए भूमि कम पड़ गई। इस पर महबलि के पास कोई चारा नहीं बचा, उन्होंने भगवान विष्णु से माफी मांगी तब विष्णु ने उन्हें पाताल लोक में रहने की सजा दी लेकिन एक वरदान भी दिया जो वो पाताल लोक जाने से पहले मांग सकते थे।

महाबलि को दिखाने के लिए खुश होती है प्रजा राजा बलि अपनी प्रजा को बहुत चाहते थे। अतः उन्होंने वरदान मांगा कि, उन्हें वर्ष में एक बार अपनी प्रजा के सुख– दुःख को देखने का अवसर मांगा जो भगवान ने दे दिया इसलिए ऐसा माना जाता है कि हर साल श्रवण नक्षत्र यानी ओणम के दिन में राजा बली अपनी प्रजा को देखने आते हैं। इसी कारण राज्य की जनता अपने महाबलि को दिखाने के लिए 'ओणम' का दिन उत्सव के रूप में मनाती हैं और नाचती–गाती है ताकि उसके राजा को लगे कि उसकी प्रजा सुखी है और उन्हें कोई तकलीफ ना हो।

ओणम' पर्व पर घरों में खास तरह के पकवान बनते हैं साथ ही यह पर्व नई फसल के आने की खुशी में भी मनाया जाता है, इस अवसर पर मलयाली समाज के लोगों ने एक–दूसरे को गले मिलकर शुभकामनाएं देते हैं. साथ ही परिवार के लोग और रिश्तेदार इस परंपरा को साथ मिलकर मनाते हैं, इस हाथियों का सजाकर उनकी रैली निकाली जाती है।

- SHAILJA CHAURASIYA

क्या वैश्विक पटल पर भारत को मान दिला पाएगी नई शिक्षा नीति?

पिछले एक दशक के दौरान भारत में शिक्षा के क्षेत्र में मात्रात्मक वृद्धि हुई है–संस्थानों की संख्या बढ़ी है, अधिक छात्रों के प्रवेश का मार्ग प्रशस्त हुआ है, अधिक पद सृजित हुए हैं और सबसे ऊपर इसके लिए अधिक धन आवंटित हुआ है, लेकिन यह गुणात्मक विकास में तब्दील नहीं हो पाया है। यह भी सोचना होगा कि विश्व के बेहतरीन 200 शैक्षिक संस्थानों में उच्च शिक्षा के किसी भी एक भारतीय संस्थान का शामिल न हो पाना भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक खतरे की घंटी है। स्पष्ट तौर पर भारत में शिक्षा के कायाकल्प की जरूरत थी। यह नेतृत्व की भयंकर कमी से जूझ रहा था जहां संस्थान अधिक आवंटन को बेहतर नतीजों में परिवर्तित नहीं कर पा रहे थे। अमरीका में स्कूलों में किये गये सुधारों के संबंध में की गई पहलों की समीक्षा करते हुए राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने जो विचार प्रकट किये थे, वे भारत पर भी लागू होते हैं: "हर समस्या का समाधान किसी न किसी जगह पर किसी न किसी ने पहले ही कर रखा है। हमारी हताशा का कारण यही लगता है कि नेतृत्व कि कमी के कारण हम इन समाधानों को लागू नहीं कर पा रहे हैं।" आधुनिक विश्व में राजनीतिक नेतृत्व करने वालों में दूरदर्शिता और संकल्प के साथ ही विषयों की व्यापक समझ होनी चाहिए। विवेकानंद और कलाम के महान व्यक्तित्व बनने के पीछे उनका असाधारण ज्ञान भी एक कारण था। भारत को उच्च शिक्षा में बेहतर अकादमिक, प्रशासनिक और राजनीतिक नेतृत्व की शिद्दत से दरकार रही है क्योंकि जिन राजनीतिक व्यक्तित्वों का ज्ञान एवं रचना जगत के साथ गहरा अन्तर्सम्बन्ध रहा है, वे ही शिक्षा एवं संस्कृति के विकास में बेहतर भूमिका निभा सकते हैं। हमें समझना होगा कि महज राजनैतिक पृष्टभूमि से जुड़े मंत्रियों से भिन्न, रचनात्मक एवं ज्ञान जगत से जुड़े मानव संसाधन मंत्रियों ने हमेशा भारत में एक सर्व समावेशी शिक्षा की दुनिया रचने में बड़ी भूमिका निभायी है। ज्ञान, रचना एवं नवाचार से जुड़े राजनीतिक नेताओं ने जिम्मेदारी मिलने पर भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति को आधारभूत एवं परिवर्तनकारी स्वरूप प्रदान किया है। शिक्षा, साहित्य एवं पर्यावरण क्षेत्र से जुड़े प्रयोगवादी विचारों के धनी वर्तमान मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' भारत में 34 वर्ष पश्चात नयी शिक्षा नीति लाकर एवं उसे लागू कर भारतीय शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन करने के लिए जाने जायेंगे। उनके द्वारा नई शिक्षा नीति लागू करने से पहले देश भर में गैर सरकारी संगठनों (NGO) द्वारा किये गये नवाचारों की पहचान करने और राज्यों के शिक्षा विभागों के सामने उनकी प्रस्तुति करने और उनके साथ उन्हें जोड़ने के लिए मंच बनाने के प्रयास किये गए। देश–विदेश के शिक्षाविदों, शिक्षकों और छात्रों से लगातार संवाद स्थापित किया गया। कई विश्वव्यापी और वैकल्पिक ज्ञान प्रणालियों को ध्यान में रखने के साथ ही डिजिटल प्रौद्योगिकी में विकास का भी समावेश किया गया।

नई शिक्षा नीति के माध्यम से स्कूली शिक्षा से उच्च शिक्षा तक :पांतरकारी सुधारों का मार्ग प्रशस्त हुआ है ताकि भारत को ज्ञान आधारित महाशक्ति बनाया जा सके। माना जा रहा है कि इस नई शिक्षा नीति को कुछ इस तरह से बनाया गया है कि यह 21 वीं सदी के उद्देश्यों को पूरा करे साथ ही भारत की परंपराओं और वैल्यू सिस्टम से भी सुसंगत हो। इसको भारत के एजुकेशन स्ट्रक्चर के सभी पहलुओं को ध्यान में रख के बनाया गया है। इसमें स्कूली शिक्षा में सुधार, पांचवी कक्षा तक मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा, 3 या 4 वर्ष का स्नातक कोर्स चुनने का विकल्प, डिग्री कोर्स में बहु स्तरीय प्रवेश या निकासी की व्यवस्था, उच्च शिक्षा में एकल नियामक, फीस तय किये जाने सहित अनेकों सुधारों की बात कही गई है। 34 साल बाद आई नई शिक्षा नीति का विशेषज्ञों और शिक्षाविदों ने स्वागत किया है।

Ganesh Utsav

THIS MONTH

August 15, 1969 - Woodstock began in a field near Yasgur's Farm at Bethel, New York. The three-day concert featured 24 rock bands and drew a crowd of more than 300,000 young people. The event came to symbolize the counter-culture movement of the 1960's.

*****

August 12, 1676 - King Philip's War ended with the assassination of Metacom, leader of the Pokanokets, a tribe within the Wampanoag Indian Federation. Nicknamed 'King Philip' by colonists, he led a Native American uprising against white settlers which resulted in a war that raged for nearly two years, now known as King Philip's War.

*****

August 16, 1777 - During the American Revolutionary War, the Battle of Bennington, Vermont, occurred as militiamen from Vermont, aided by Massachusetts troops, wiped out a detachment of 800 German-Hessians sent by British General Burgoyne to seize horses.

*****

August 16, 1780 - The Battle of Camden in South Carolina occurred during the American Revolutionary War. The battle was a big defeat for the Americans as forces under General Gates were defeated by troops of British General Charles Cornwallis, resulting in 900 Americans killed and 1,000 captured.

Compilation:
Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Camcorder: A portable camera with the videotape recorder or some other recording device attached or built into it to form a single unit.

*****

Control Room: A room adjacent to the studio in which the director, the technical director, the audio engineer, and sometimes the lighting director perform their various production functions.

*****

Expanded System: A television system consisting of equipment and procedures that allows for selection, control, recording, playback, and transmission of television pictures and sound.

*****

Feed: Signal transmission from one program source to another, such as a network feed or a remote feed.

*****

Line Monitor: The monitor that shows only the line-out pictures that go on the air or on videotape. Also called master monitor or program monitor.

*****

Line-out: The line that carries the final video or audio output for broadcast.

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

Dengue In Times Of Corona -

With the monsoon season setting in the threat of viral, bacterial and vector-borne infections are high. A Lancet report published recently states that dengue and Covid-19 are difficult to distinguish because of their **shared clinical and laboratory features**. Many hospitals have recently encountered a handful of curious cases where Covid-19 patients have walked in with dengue-positive reports. With the monsoon already on, the COVID-dengue combination - could prove a tough challenge for doctors. Dengue fever is usually caused by the dengue virus, transmitted by the bite of the Aedes mosquitos. However, dengue and coronavirus lead to the common initial symptom of high body temperature. It is, therefore, crucial to understand the symptoms of the two so that one does not mix up the two infections and can get medical help for the disease one is afflicted with.

Common Symptoms Between Covid-19 And Dengue A few symptoms of Covid-19 infection and dengue fever overlap with each other. The most common symptom is fever, which is an initial symptom of both diseases. The other overlapping symptoms of the diseases are headaches, muscle and joint pains, and tiredness. Even people with pneumonia - a classic COVID sign, have been admitted for dengue as they showed symptoms of the latter. Moreover, dengue is a seasonal, viral infection, and most people affected by it are asymptomatic and Covid-19 too can be asymptomatic. Both diseases can be life-threatening and require medical attention to treatments.

How Can You Differentiate Between The Two? Even though both the diseases are similar in nature, however, one can still differentiate between the two diseases based on their other symptoms. For instance, certain symptoms like vomiting, swollen glands and rashes are exclusive to Dengue and rare in the Coronavirus. In case of severe Dengue, some of the symptoms include severe abdominal pain, persistent vomiting, rapid breathing, bleeding gums, fatigue, restlessness, and blood in vomit. However, in the case of the Coronavirus, instead of vomit, people infected with the disease experience diarrhoea. Initially, fever, cough and shortness of breath were the only reported symptoms of COVID-19, but later over a period of time, other symptoms were also seen with those infected with Covid-19 -that included loss of taste and smell, rashes on the skin, lesions on toes, among others. It is quite possible that many infected with the novel coronavirus may not develop symptoms for a very long time. As both, diseases can be life-threatening and require medical attention for treatments. Therefore, in uncertain times such as now, if fever persists, and you experience any of the symptoms of either disease, consulting a doctor is strongly recommended. And if clinics and hospitals are not accessible right now due to the pandemic, potential patients can also make use of tele consultations.

Dengue And Monsoon Season

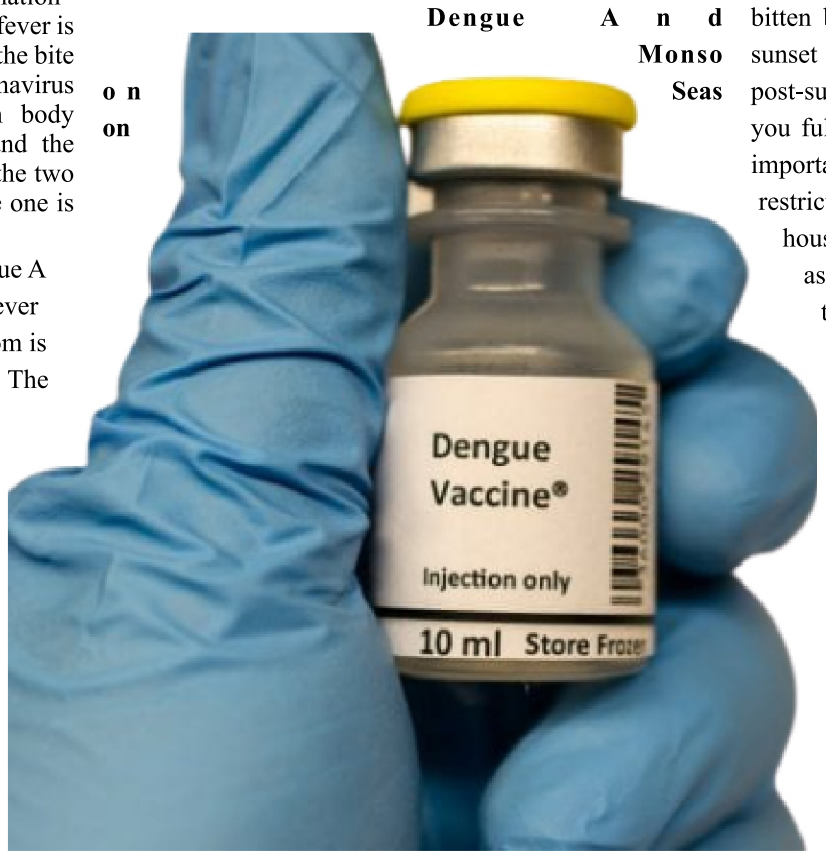

Due to several issues such as waterlogging, unclean environments, unplanned urban settlements and rapid urbanization in recent years, there has been an increase in mosquito breeding, especially in urban and semi-urban areas. These are also some of the major causes of an increase in dengue cases during the monsoon season. Even though we have been taking several precautionary measures such as fogging, disinfectant (DDT) sprays, mosquito repellents, avoiding water stagnation and other measures to prevent mosquito breeding, however, It has become difficult to completely eradicate the disease as the surrounding environment is full of breeding grounds for mosquitoes. Therefore, early diagnosis and timely treatment is the key to keep dengue at bay during the times of Corona.

Dengue Menace: 10 Foods To Increase Your Blood Platelet Count

In order to restrict the spread of this deadly virus, individuals and families can make use of the following measures to prevent themselves from contracting dengue at home - Use mosquito nets while sleeping. This is the easiest, most effective and a natural way to avoid getting bitten by mosquitoes. Close doors and windows before sunset as mosquitoes are usually more active during and post-sunset. Cover your body and wear clothes that keep you fully covered. Keeping the environment clean is an important way to prevent all vector-borne diseases as this restricts the growth of mosquitoes. Clean and mop your house every day and get rid of excess and stagnant water as these are breeding ground for mosquitoes. Eat foods to cope with infections before the immune system is damaged further. Use multiple measures- Try to use insect spray containing pyrethroids during evenings and nights especially around the sleeping areas; apply insect repellent lotions and creams to all the exposed areas of your body. If you're under home isolation, ensure that you are maintaining social distance and are self-quarantined. The use of masks and overall sanitization is important. Why Coping With The Dengue-COVID-19 Is A Double Whammy? As dengue season sets in across large parts of India with the onset of the monsoon, the overlapping symptoms of COVID-19 and the mosquito-borne disease dengue are a major cause for worry and the country's healthcare infrastructure may not be able to cope with this double whammy. COVID-19: UNICEF Guidelines On Mental Health For Teenagers The impact of a 'dengue-COVID-19' season would require two different diagnostic tests and extract a huge toll on patients too, each disease making the other more complicated to deal with and perhaps more fatal. Based on 2016-2019 data, India gets about 100,000 to 200,000 confirmed cases of dengue each year. Therefore, the dengue season may aggravate the COVID-19 situation as both viruses may supplement each other. As most of the symptoms are overlapping, the simultaneous infection will be much more fatal. Weakened immune systems will help the other to turn

-Geetika Bisht

भारतीय सैनिकों ने पैंगोग झील इलाके में यथास्थिति बदलने के चीन के ताजा प्रयासों को किया विफल

भारतीय सेना ने सोमवार को कहा कि भारतीय जवानों ने पैंगोंग सो क्षेत्र में "एकतरफा" यथास्थिति बदलने के लिए चीन की जनमुक्ति सेना (पीएलए) की ओर से चलाई गई "उकसावेपूर्ण सैन्य गतिविधि" विफल कर दी।

सेना के प्रवक्ता कर्नल अमन आनंद ने बताया कि पीएलए ने पूर्वी लद्दाख गतिरोध पर सैन्य और राजनयिक बातचीत के जरिये बनी पिछली आम सहमति का "उल्लंघन" किया और 29 और 30 अगस्त की दरम्यानी रात यथास्थिति बदलने के लिए उकसावेपूर्ण सैन्य गतिविधि संचालित की।

कर्नल आनंद ने बताया कि मामले के हल के लिए चुशूल में 'ब्रिगेड कमांडर' स्तर की एक फ्लैग मीटिंग हो रही है। कर्नल ने एक बयान में कहा, " पीएलए सैनिकों ने 29 और 30 अगस्त की दरमियानी रात, पूर्वी लद्दाख गतिरोध पर सैन्य और राजनयिक बातचीत के जरिये बनी पिछली आम सहमति का "उल्लंघन" किया और यथास्थिति बदलने के लिए उकसावेपूर्ण सैन्य गतिविधि संचालित की।"

सेना के प्रवक्ता ने कहा," भारतीय सैनिकों ने पैंगोंग सो (झील) के दक्षिणी किनारे पर पीएलए की गतिविधि को पहले ही विफल कर दियाश, हमारे पोजिशन मजबूत करने और जमीनी तथ्यों को एकतरफा बदलने के चीनी इरादों को विफल करने के लिए उपाय भी किए।"

उन्होंने कहा कि भारतीय सेना बातचीत के माध्यम से शांति और स्थिरता बनाए रखने को प्रतिबद्ध है, लेकिन साथ ही देश की क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने के लिए भी उतनी ही प्रतिबद्ध है।दोनों देशों के बीच पहली बार गलवान घाटी में 15 जून को एक हिंसक झड़प हुई थी, जिसमें भारत के 20 जवान शहीद हो गए थे। चीन ने उसके हताहत हुए सैनिकों के बारे में कोई जानकारी नहीं दी लेकिन अमेरिका खुफिया रिपोर्ट के अनुसार उसके 35 सैनिक हताहत हुए थे।

भारत और चीन ने पिछले ढाई महीने में कई स्तर की सैन्य और राजनयिक बातचीत की है लेकिन पूर्वी लद्दाख मामले पर कोई ठोस समाधान नहीं निकल पाया है।

पूर्वी लद्दाख में तनाव को कम करने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल और चीन के विदेश मंत्री वांग यी के बीच फोन पर बातचीत के बाद छह जुलाई को दोनों पक्षों की ओर से पीछे हटने की प्रक्रिया शुरू हुई थी। यह प्रक्रिया मध्य जुलाई से आगे नहीं बढ़ी है।

-KANISHK CHAUDHGARY

प्रशांत भूषण पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाया एक रुपए का जुर्माना, ना देने पर होगी 3 महीने की जेल

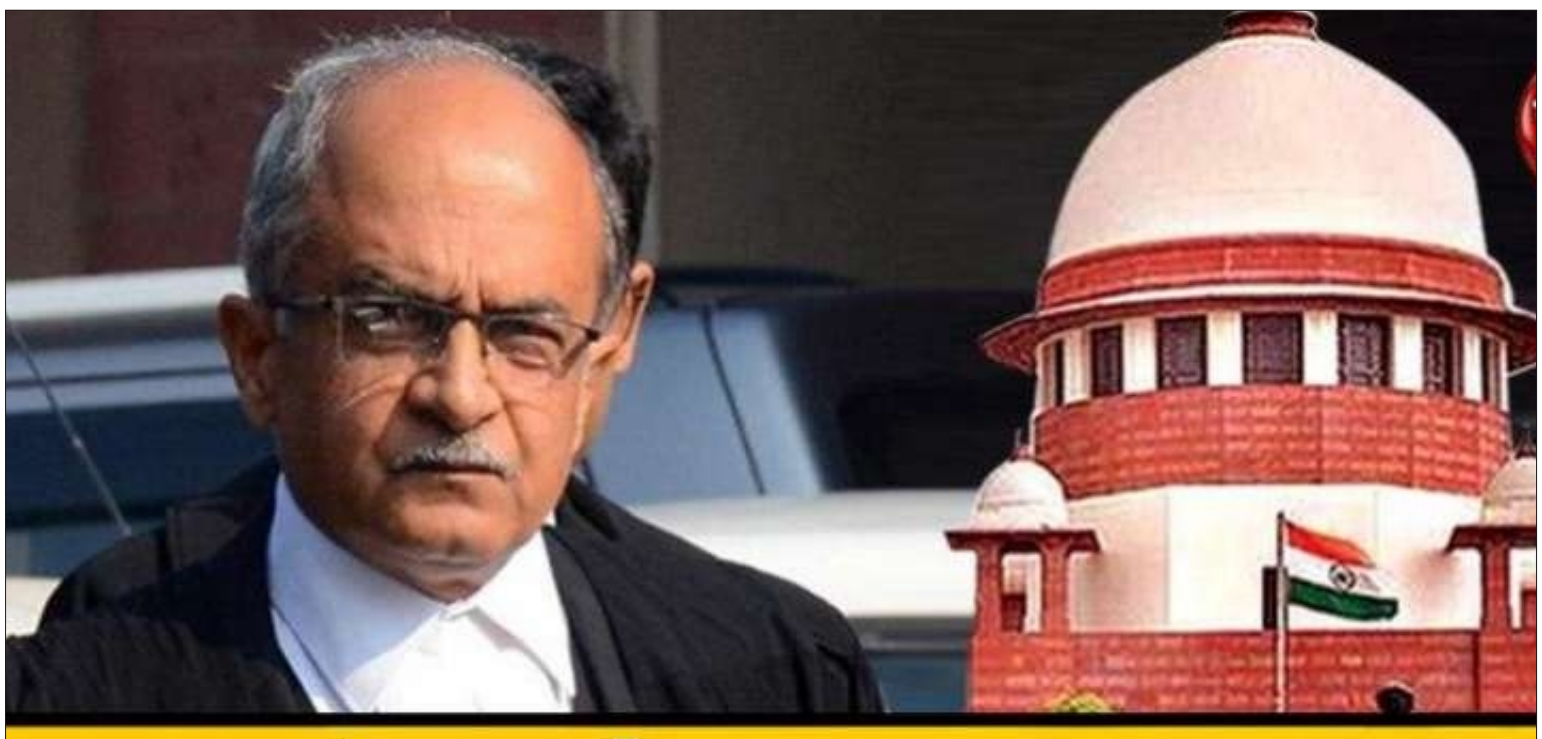

'प्रशांत भूषण पर एक रुपए का जुर्माना'

सुप्रीम कोर्ट ने अदालत की अवमानना मामले में सीनियर वकील प्रशांत भूषण पर एक रुपए का जुर्माना लगाया है। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को प्रशांत भूषण को 15 सितंबर एक रुपया बतौर जुर्माना भर देने का आदेश दिया है। प्रशांत जुर्माना नहीं भरते तो उन्हें तीन महीने के लिए जेल जाना होगा। साथ ही तीन साल तक के लिए वकालत करने पर भी रोक लग जाएगी। चीफ जस्टिस एसए बोबडे को लेकर ट्वीट करने के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने प्रशांत भूषण को अदालती अवमानना का दोषी ठहराया था। सुप्रीम कोर्ट ने मामले में प्रशांत भूषण से माफी मांगने को कहा था लेकिन प्रशांत भूषण ने ऐसा करने से इनकार कर दिया था। जिसके बाद आज सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में सजा का ऐलान किया है।

जस्टिस अरुण मिश्रा, जस्टिस बी आर गवई और जस्टिस कृष्ण मुरारी की पीठ ने मामले में सजा सुनाते हुए कहा कि भूषण ने अपने बयान को पब्लिसिटी दिलाई उसके बाद कोर्ट ने इस मामले पर संज्ञान लिया। कोर्ट ने फैसले में भूषण के कदम को सही नहीं मानते हुए कहा कि कोर्ट के विचार किए जाने से पहले ही प्रशांत भूषण के प्रेस को दिए बयान कार्यवाही को प्रभावित करने वाले थे। सुप्रीम कोर्ट ने अपना आदेश सुनाते हुए कहा कि कोर्ट का फैसला किसी प्रकाशन या मीडिया में आए विचारों से प्रभावित नहीं हो सकता।

प्रशांत भूषण ने चीफ जस्टिस को लेकर ट्वीट किए थे। जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने संज्ञान लेते हुए उन पर अवमानना का मामला चलाया था। अदालत ने उन्हें 14 अगस्त को अवमानना का दोषी पाया। इसके बाद 20 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट ने प्रशांत भूषण को सजा पर सुनवाई टाल दी थी और उनको अपने उस बयान पर फिर से विचार करने को कहा, जिसमें उन्होंने मामले में माफी मांगने से इनकार कर दिया था।

प्रशांत के माफी मांगने से साफ इनकार करने के बाद 25 अगस्त को मामले की सुनवाई हुई थी। सुनवाई के दौरान जस्टिस मिश्रा ने कहा था कि हम निष्पक्ष आलोचना का स्वागत करते हैं लेकिन हमें आलोचना का जवाब देने के लिए प्रेस में जा सकते हैं। एक जज के रूप में, मैं कभी प्रेस में नहीं गया। यही वह नैतिकता है जिसका हमें अवलोकन करना है। भूषण के बयान और सफाई को पढ़ना दर्दनाक है। प्रशांत भूषण जैसे 30 साल के अनुभव वाले वरिष्ठ वकील को इस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिए। जस्टिस मिश्रा ने कहा हम अंदर और बाहर की बहुत सी बातें जानते हैं लेकिन क्या हम उन सबके लिए प्रेस में जा सकते हैं? हम नहीं जा सकते। हमें एक दूसरे की और संस्था की गरिमा की रक्षा करनी होगी। 25 अगस्त को भी मामले में सजा को लेकर ऐलान नहीं किया गया था। सुनवाई के दौरान अटॉर्नी जनरल ने भी प्रशांत भूषण को चेतावनी देकर छोड़ने की अपील कोर्ट से की थी।

-Y.B

Vol. 14 **No.** 8
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal,Bal Krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

*****

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

*****

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

*****

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

*****

Compilation:
Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners
dreams;
losers have schemes.
schemes.

*****

Winners say,
"I must do something";
losers say,
"Something must be done."

*****

Winners are a part of the team;
losers are apart from the team.

*****

Winners
makes commitments;
Losers
makes promises.

*****

Winners
see the gain;
losers
see pain.

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**